

THE WALL STREET STOCK

Ferdinando Frega - Nando the Scribe



वॉल स्ट्रीट का शेयर

वॉल स्ट्रीट गाथा की भूमिका

मैं वह दिन कभी नहीं भूलूँगा जब मैं बोर्डिंग स्कूल में दाखिल हुआ।

15 अक्टूबर 1970 का दिन था। गुरुवार।

इस मौके पर मेरे पिता वहाँ थे। उन्होंने जिलेट से एक दोपहर की छुट्टी माँगी थी, जो कम ही होता था। आज पीछे मुड़कर देखता हूँ तो समझ आता है कि वे महज़ एक बच्चे को स्कूल छोड़ने नहीं आए थे। वे जिलेट की कहानी का एक छोटा-सा टुकड़ा उस दुनिया को सौंप रहे थे जिसे हम दोनों में से कोई अभी समझ नहीं सकता था।

सिस्टर जुसेप्पीना नाम की एक युवा नन मुझसे मिलने आई।

गोरा रंग, नीली आँखें, जवान चेहरा। बाक़ी सब कुछ ओढ़नी ने ढँक रखा था। उन्होंने मेरा हाथ थामा और मुझे कक्षा 1ए तक ले गईं, जहाँ मेरी अध्यापिका, सिस्टर दोमिनेल्ला, इंतज़ार कर रही थीं।

सिस्टर दोमिनेल्ला पहले ही बूढ़ी हो चुकी थीं।

वे लगातार अपने घुटने मलती रहतीं और ग़ज़ब के भरोसे के साथ बारिश की भविष्यवाणी करतीं। उनके मुताबिक़ मौसम उनके जोड़ों के भीतर रहता था। घुटने दुखे, तो बादल आ रहे हैं।

जब मैं कक्षा में दाखिल हुआ, तो उन्हें मेरा नाम पहले से मालूम था।

दरअसल, सबको मालूम था।

उन दीवारों के भीतर ख़बरें तेज़ी से फैलती थीं।

नज़राने मुझसे पहले पहुँच चुके थे।

हर कमरे में वही भेंट थी: प्लास्टिक की सादी थैलियाँ जिन पर 1970 के दशक वाला जिलेट का लाल लोगो था, और सजावट के नाम पर बस ब्लेडों की तस्वीरें।

इसे समझने के लिए मैं बहुत छोटा था, पर मैं पहले ही उस कंपनी का एक नन्हा राजदूत बन चुका था जो ज़िंदगी भर मेरे साथ चलने वाली थी।

पहला पाठ कर्म के बारे में था।

अच्छे कर्म।

छह साल की उम्र में यह काफ़ी सीधा लगता था।

अच्छा कर्म अच्छा था।

बुरा कर्म बुरा था।

बात ख़त्म।

पर ज़िंदगी के, हमेशा की तरह, कुछ और ही इरादे थे।

कुछ साल बाद मैंने जाना कि कर्मों को कभी इस बात से नहीं परखा जाता कि वे क्या हैं। उन्हें उन कहानियों से परखा जाता है जो उनके इर्द-गिर्द बुनी होती हैं।

किसी को एक टॉफ़ी दीजिए और वह नेकी बन जाती है।

उसी टॉफ़ी को किसी और मक़सद से इस्तेमाल कीजिए और अचानक वह बुराई बन जाती है।

कर्म जस का तस रहता है।

बदलता है तो सिर्फ़ नैरेटिव।

वह मेरी ज़िंदगी का पहला असली सबक़ था।

नैतिकता नहीं।

धर्म नहीं।

अनुशासन नहीं।

नैरेटिव।

वह अजीब ताक़त जो एक जैसे तथ्यों को उलटे अर्थों में बदल देती है।

दशकों बाद जिलेट मुझे बोस्टन ले जाने वाली थी।

दुनिया भर के सहकर्मियों के साथ मैं आख़िरकार उस वित्तीय राजधानी में खड़ा होने वाला था जिसका सपना बोर्डिंग स्कूलों के बच्चे कभी नहीं देखते: न्यूयॉर्क।

ख़ुद वॉल स्ट्रीट के पास भी।

पर वह दूसरी कहानी है।

वह पहले ही कहीं और लिखी जा चुकी है, और महज़ साहित्यिक जगह भरने के लिए ख़ुद को दोहराना मुझे कभी अच्छा नहीं लगा।

फिर भी, एक खयाल है जो बचा रहता है।

लोग हमेशा अपने कर्मों के लिए याद किए जाते हैं।

कुछ कर्म कहानियाँ बन जाते हैं।

कुछ कहानियाँ इतिहास बन जाती हैं।

और अगर वे कर्म कागज़ पर लिखे हों, उनका कारोबार होता हो, उन्हें आँका जाता हो, खरीदा जाता हो, बेचा जाता हो और हर दिन उनका भाव बोला जाता हो...

तो कौन कमबख्त उन्हें कभी भूलेगा?

फर्दिनांदो फ्रेगा

ब्लेडफ्रेगा

वॉल स्ट्रीट गाथा